



भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी
कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

www.khetiduniyan.in

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

KHETI DUNIYAN, PATIALA

All Subject to Patiala Jurisdiction.

BOOK POST – PRINTED MATTER

• Issue Dated 05-08-2023 • Vol.7 No.31 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 8

E-mail : Kdpublications@yahoo.co.in

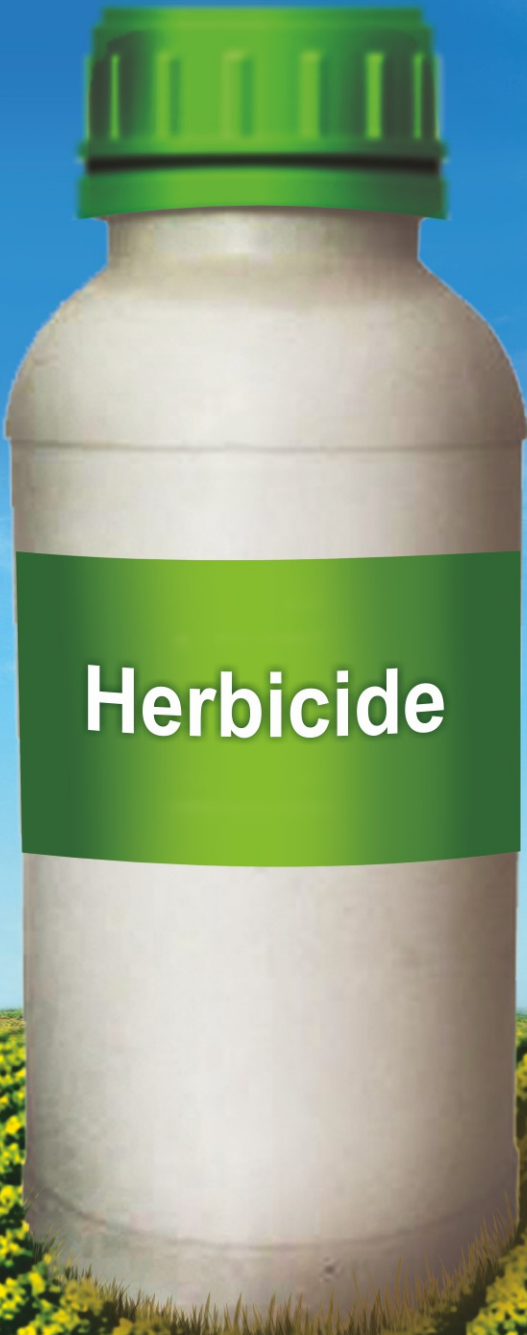
Godrej agrovet
brighter farming

CROP PROTECTION BUSINESS



खरपतवारनाशक से
जब लगे

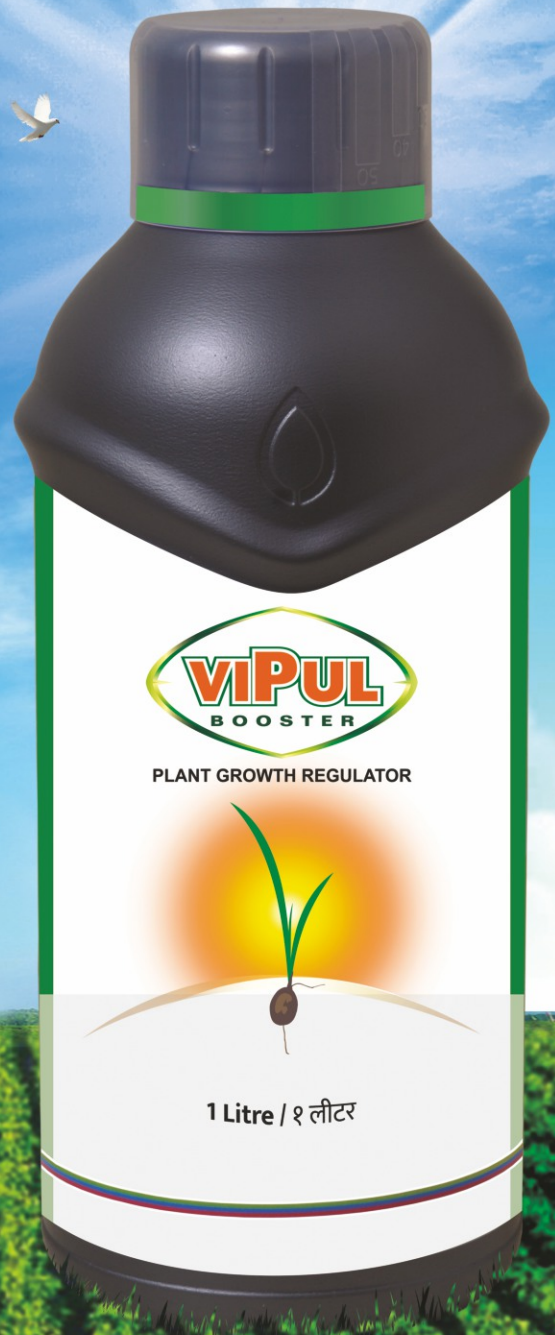
झाड़के



विपुल के साथ

फसल फिर से

चमके



मिलीबग के वाहक : पशु, पक्षी, मजदूर कृषि औजार, पानी, हवा, चींटियाँ आदि।

मिलीबग के पसंद के पौधे एवं फसल : कपास, टमाटर, भिंडी, बैंगन, गाजर घास (कांग्रेस घास) उत्तक, आधाशीशी, गुडहल, गुलदाऊदी आदि हैं।

जीवन-चक्र : मिलीबग की तीन प्रजातियाँ होती हैं, जिसमें 'फिनोकोकस, सोलेनोपोसिस प्रमुख हैं।

1. मिलीबग में साधारणतया अलैंगिक (पार्थोजेनेसिस) प्रजनन होता है।

2. मादा थैली में 150 से 600 अंडे देती है। इसमें अधिकांश मादा होती है।

3. अंडे से 3-9 दिन में शिशु (निम्फ) निकल आते हैं। इन्हें कॉलर कहते हैं, ये घुमंतु होते हैं। शिशु अवस्था 22-25 दिन की रहती है। ये तीन बार खोल बदलते हैं।

4. मिलीबग सामान्य स्थिति में 25-30 दिन में वयस्क हो जाती है।

5. वर्ष में 12-15 पीढ़ियाँ बनाती है।

6. सर्दी में पौधे या ज़मीन में



कपास का शत्रु मिलीबग

नुकसान की प्रकृति :

1. यह पौधे के तने, पत्ते, डिण्डू एवं जड़ों से रस चूस कर पौधों को कमजोर करती है।

2. इसके आक्रमण से डिण्डू कम मात्रा में छोटे एवं इनका आकार विकृत हो जाता है।

3. यह कीड़ा शहद जैसे पदार्थ निकालता है। इससे काली फफूंद

डॉ. तख्त सिंह, राजपुरोहित, इमरतिया बेरा पावटा, जोधपुर

4. शहद सा पदार्थ चींटियों को आकर्षित करता है, जो इनको दूसरे खेतों में पहुंचाने में वाहक का कार्य करती है।

कपास विकास निदेशालय भारत सरकार के लिए कपास तकनीकी मिशन एम.एम. द्वितीय के अंतर्गत बीटी कपास विकास एवं अनुसंधान संगठन मुम्बई द्वारा प्रसारित।

मिलीबग नियंत्रण : सामूहिक प्रयास से ही मिलीबग नियंत्रण हो सकता है। यह एक किसान की नहीं गांव के सभी किसानों की समस्या है। सभी कपास बोने वाले किसान जागरूक रहें।

बुवाई पूर्व : 1. खेत की मेड़ों को खरपतवार रहित रखें। गाजर घास, आधाशीशी, आका को नहीं पनपने दें।

2. उखाड़ी गई खरपतवार को पानी के धोरों में ना फेंकें।

3. खेत की तैयारी के समय चींटियों के बिलों को नष्ट करें।

बोते समय :

1. फसल के चारों ओर मक्का और चंवले की फसलें बोयें।

2. कपास की फसल में अन्तरशस्य के रूप में चंवले की फसल बोएं।

खड़ी फसल में : 1. चींटियों के बिलों को खेत में देख कर क्लोरोपायरीफॉस 2.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर बिलों में डालें या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण का प्रयोग करें।

2. प्रारंभिक अवस्था में मिलीबग से संक्रमित पौधों को उखाड़ कर गड्डे में गाड़ कर सिफारिश किए कीटनाशी का प्रयोग करें।

3. स्प्रे मशीनों को अप्रभावित खेतों में प्रयोग करने से पहले पानी से अच्छी तरह धोलें। संभव है आपकी मशीन मिलीबग की वाहक बन जाए।

4. लगातार चौकरी रखें। मिलीबग से संक्रमित, पौधों पर स्थानीय

(स्पोट) नियंत्रण करें। मित्र कीटों से इसका बचाव होगा। आक्रमण होने पर कार्बोरिल 50 प्रतिशत 2500 ग्राम या क्विनलफॉस 25 प्रतिशत 2 लीटर या प्रोफेनोफॉस 50 प्रतिशत 1250 मिलीलीटर या ऐसीफेट 75 प्रतिशत 2 किलो या क्लोरोपायरीफॉस 5 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से आवश्यकता अनुसार 1 से 3 बार छिड़कें। एक ही दवा बार-बार प्रयोग ना करें।

6. डिटरजेंट पाउडर 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल के छिड़काव का मिलीबग नियंत्रण में अच्छे परिणाम आए हैं।

7. संक्रमित खेत में अनावश्यक ना घूमें और ना घूमने दें।

फसल की समाप्ति पर :

1. आक्रमित खेतों में पशु ना चराएं।

2. आक्रमित खेत के डंठल उखाड़ कर गाड़ कर सिफारिश किए गए कीटनाशी का छिड़काव करें।

3. कपास की लकड़ियाँ (बनोठिया) खेत से दूर रखें। इसके चारों ओर मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण का घेरा बना दें।

ध्यान देने योग्य बातें :

1. बी.टी. कपास का आमाम्य बीज काम में ना लें।

2. मिलीबग का जीवन-चक्र तोड़ने के लिए फसल-चक्र में बदलाव करें।

3. खेत व खेत के चारों तरफ खरपतवार ना पनपने दें।

विशेष बात :

1. गाजर घास पर्यावरण का शत्रु ही नहीं, मिलीबग का आश्रयदाता है। मनुष्य के इस शत्रु के नाश में पंचायतराज संस्थाएं सक्रिय सहयोग करें।

2. मिलीबग के लिए सामूहिक सहयोग की आवश्यकता है।



अंडे या अन्य अवस्था में रहती है। गर्मी में वर्ष भर तेज़ी से प्रजनन करती है।

का पौधों पर प्रकोप हो जाता है। इससे प्रकाश संश्लेषण क्रिया कम हो जाती है।

अजोला की खेती — एक वरदान

डॉ. गुरनाम सिंह, डॉ. राजेश लाठर, डॉ. वंदना एवं डॉ. श्री देवी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पंचकूला



अजोला तेज़ी से बढ़ने वाली वह जलीय फसल है, जिसको किसान छोटे स्थान पर कम खर्च में उत्पादन कर सकता है। यह पशुओं के लिए पौष्टिक आहार का अच्छा साधन है। इसके द्वारा किसान की बाहरी आहार की बचत हो सकती है। अजोला उत्पादन के लिए किसी भी आधुनिक तकनीकी की ज़रूरत नहीं होती है। इसलिए हर किसान इसका उत्पादन करके अपनी आमदनी दोगुनी कर सकता है।

प्राकृतिक रूप से अजोला उष्ण व गर्म उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। अजोला पानी पर (मिट्टी के बिना) उगने वाला एक फर्न है, जो शैवाल (एल्गे) जैसा होता है। यह उथले जलाशयों में उगाया जाता है। अनुकूल परिस्थितियों में फर्न बहुत तेज़ी से फैलता है। अजोला सस्ता, सुपाच्य एवं पौष्टिक पूरक पशु आहार है। अजोला को मिक्चर सप्लीमेंट/पोषण मिक्चर के साथ मिलाया जा सकता है या पशुओं को सीधे दिया जा सकता है। इसे खिलाने से सामान्य आहार वाले पशुओं के दूध में वसा व वसा रहित पदार्थ अधिक पाया जाता है। यह पशुओं में बाँझपन निवारण में भी उपयोगी है। पशुओं के मूत्र में खून की समस्या फास्फोरस की कमी से होती है। पशुओं को अजोला खिलाने से यह कमी दूर हो जाती है। अजोला से पशुओं में कैल्शियम, फास्फोरस और लोहे की आवश्यकता की पूर्ति होती है और उनका शारीरिक विकास भी बहुत अच्छा होता है। इसके अतिरिक्त अजोला में प्रोटीन

आवश्यक अमीनो अम्ल, विटामिन ए, विटामिन बी-12 तथा बीटा-कैरोटीन एवं खनिज लवण जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, पोटेशियम, आयरन, कॉपर, मैग्नीशियम आदि भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसमें शुष्क मात्रा के आधार पर 40-60 प्रतिशत प्रोटीन, 210 प्रतिशत अमीनो अम्ल, 10-15 प्रतिशत खनिज, जैव सक्रिय पदार्थ एवं पालीमर्स आदि पाए जाते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट एवं वसा की मात्रा कम होती है। इसलिए इसकी संरचना इसे बहुत अधिक पौष्टिक एवं असरकारक आदर्श पशु आहार



बनाती है। अजोला गाय, भैंस, भेड़, बकरियों, मुर्गियों आदि के लिए एक बहुत अधिक उपयोगी चारा सिद्ध हो रहा है। दुधारू पशुओं पर हुए प्रयोगों से यह साबित हुआ है कि जब पशुओं को उनके दैनिक आहार के साथ डेढ़ से दो किलोग्राम अजोला

प्रति दिन खिलाया जाता है, तो दूध उत्पादन में 15-20 प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज की गई है। इसके साथ-साथ इसका आहार लेने वाली गाय-भैंसों के दूध की गुणवत्ता भी पहले से बेहतर हो जाती है। हरियाणा प्रदेश में मुर्गीपालन व्यवसाय भी काफी प्रचलित है। अजोला बेहद सुपाच्य होता है और यह मुर्गियों का भी पसंदीदा भोजन है। कुक्कुट आहार के रूप में अजोला का प्रयोग करने पर ब्रायलर पक्षियों के वजन तथा अंग उत्पादन में वृद्धि पाई जाती है। मुर्गी-पालन करने वाले व्यवसायियों के लिए अजोला एक बहुत ही लाभकारी चारा सिद्ध हो रहा है। मुर्गीपालन करने वाले व्यवसायियों के लिए अजोला एक बहुत ही लाभकारी चारा सिद्ध हो रहा है। यही नहीं, अजोला को खारगोश, बत्ताखों व भेड़-बकरियों के आहार के रूप में भी बहुत अधिक उपयोगी भोजन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

अजोला उत्पादन करने का तरीका :

1. अजोला का उत्पादन करना बहुत ही आसान है, इसके लिए सबसे पहले किसी भी छायादार स्थान पर 2 मीटर लंबा, 2 मीटर चौड़ा व 30 सेंटीमीटर गहरा गड्ढा खोदा जाता है।

2. पानी के रिसाव को रोकने

ओर्बिया बिजनेस एवं प्रेसिज़न कृषि समाधानों में वैश्विक लीडर, नेटाफिम कंपनी, बैटर लाइफ फार्मिंग के तहत शिवपुरी के किसानों को कृषि इनपुट पर ज्यादा खर्च किए बिना टमाटर की पैदावार बढ़ाने तथा कुल आमदनी में वृद्धि करने में मदद कर रहा है। इस अभियान के अन्तर्गत जिला के किसानों को ड्रिप इरिगेशन टैक्नोलॉजी अपनाने का प्रोत्साहन दिया जा रहा है। शिवपुरी जिले के खजुरी, कोलारस और पोहारी क्षेत्र में मौजूद चार बैटर लाइफ फार्मिंग (बी.एल.एफ.) केन्द्रों द्वारा ड्रिप इरिगेशन प्रणाली को किसानों के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है। नेटाफिम ने अब तक शिवपुरी जिले में 1,600 हैक्टेयर जमीन में ड्रिप इरिगेशन प्रणाली कार्यान्वित की है। यह देखा गया है कि शिवपुरी जिले में जो किसान बिना ड्रिप इरिगेशन के 20 टन की पैदावार और केवल 1 लाख से 1.2 लाख कुल आय प्राप्त करता था, वह अब इस आधुनिक टैक्नोलॉजी के सहायता से प्रति एकड़ 30 टन की पैदावार करते हुए 1.5 लाख से 2.5 लाख रुपए की कुल आमदनी कमा पा रहा है।

मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में 10 लाख हैक्टेयर की कुल उपलब्ध भूमि में से 4 लाख हैक्टेयर पर खेती की जाती है। यह जिला मध्य प्रदेश में मुख्य टमाटर उत्पादकों में से एक है। पारम्परिक तौर पर जिले के किसान कुल 8,145 हैक्टेयर जमीन में 2.5 लाख मीट्रिक टन टमाटर उगाते हैं। टमाटर के लिए मशहूर होने के बावजूद तथा अक्सर बाजारों में टमाटर के अच्छे मूल्य होने पर भी, शिवपुरी के छोटे किसानों को टमाटर की फसलों की बेहतर पैदावार के लिए काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके सबसे बड़े कारणों में से एक टमाटर की खेती में फ्लड इरिगेशन का उपयोग है, जिससे कृषि इनपुट का खर्च बढ़ जाता है, उर्वरक की बर्बादी अधिक होती है और खरपतवार की मात्रा बढ़ने की अधिक संभावना होती है। इसके अतिरिक्त किसानों को एक समान आकार की फसल प्राप्त करने में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। टमाटर की खेती में काफी ज्यादा पानी लगता है, खासकर पौधा लगाने के तुरन्त बाद, ताकि उत्पादन की प्रक्रिया में वह अपनी पूरी क्षमता



नेटाफिम ड्रिप इरिगेशन प्रणाली ने शिवपुरी जिला, मध्य प्रदेश के टमाटर खेती में लाई क्रांति

तक पहुंच सके। इस जरूरत को ड्रिप इरिगेशन टैक्नोलॉजी अच्छी तरह से पूरा करता है, इसी कारण, जिले के किसानों को अधिक पैदावार के साथ अपनी आर्थिक वृद्धि हेतु इस टैक्नोलॉजी को अपनाने के लिए ग्लोबल बी.एल.एफ. अलायंस पार्टनर, नेटाफिम अधिक से अधिक प्रोत्साहित कर रही है।

महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, गुजरात में टमाटर के खेतों में ड्रिप इरिगेशन के सफल मॉडल को दोहराते हुए और खेती का एक अनुकूल वातावरण बनाने के लिए नेटाफिम लगातार जिले भर में ड्रिप इरिगेशन प्रणाली लागू करने का सतत प्रयास कर रहा है। ड्रिप इरिगेशन में पानी और पोषक तत्वों की नपि-तुली मात्रा सही समय पर सीधे जड़ों तक पहुंचती है, जिससे किसानों को इनपुट की लागत में 25 प्रतिशत की कमी लाने और ज्यादा से ज्यादा लाभ अर्जित करने में मदद मिलती है। ड्रिप इरिगेशन द्वारा पोषक तत्व सीधे जड़ों में पहुंचते हैं, जिससे अनावश्यक बर्बादी और लागत में कमी आती है।

किसानों की सुविधा के लिए कस्टमाइजेशन के साथ-साथ सहूलियत के लिए, कंपनी ने अपने इनोवेटिव फ्लेक्सनेट पोर्टेबल ड्रिप किट को उपलब्ध करवाया है। यह

किट 1 बीघे के छोटे भूखंड तथा बड़े खेतों के लिए भी उपलब्ध है। यह ड्रिप किट बक्से में आता है और सुविधाजनक एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता है। किसान बिना किसी तकनीकी

द्वारा टमाटर की कटाई कर लेने के बाद किट के सब-मेन पाईप का उपयोग गेहूं में फरो इरिगेशन के लिए भी किया जा सकता है। कंपनी के प्रयासों एवं अत्याधुनिक सूक्ष्म-सिंचाई समाधानों से किसानों

सामर्थ्यवान हो रहे हैं।

इस सफलता के बारे में श्री अमित महेश्वरी, हैड, बिजनेस डेवलपमेंट, नेटाफिम ने कहा कि, "बैटर लाइफ फार्मिंग केन्द्रों द्वारा शिवपुरी में टमाटर उत्पादकों को उच्च गुणवत्ता के कृषि इनपुट, वित्त पोषण और तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाए गए हैं। इस समय किसानों द्वारा कृषि इनपुट के सर्वोत्तम इस्तेमाल पर केन्द्रित होकर टमाटर की फसल कटाई का समय निर्धारित करना जरूरी है, जो केवल ड्रिप इरिगेशन टैक्नोलॉजी अपनाकर ही किया जा सकता है। हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि यह टैक्नोलॉजी अब हमारे केन्द्रों पर बहुत आसानी से उपलब्ध है। आने वाले समय में बैटर लाइफ फार्मिंग केन्द्र, नेटाफिम की विशेषता के साथ कृषि के परिदृश्य में परिवर्तन लाने में मुख्य भूमिका निभाएंगे और जिले में एक सस्टेनेबल व समृद्ध खेती का परिवेश स्थापित करेंगे।"

मध्य प्रदेश में बी.एल.एफ. के 65 केन्द्र हैं और यह लगातार बढ़ रहे हैं। अपने केन्द्रों के माध्यम से बैटर लाइफ फार्मिंग का सफल गठबंधन, खेती के समग्र समाधान प्रदान करता है, जिनमें गहरे ग्रामीण इलाकों में उच्च गुणवत्ता के कृषि



सहायता और श्रमिक के बगैर स्थापित कर सकते हैं। यह किट अनेक विशेषताएं प्रदान करती है। किसान

का समुदाय खेती की विधि में सुधार लाने, बेहतर उत्पादकता और लाभ अर्जित करने में ओर अधिक

इनपुट, सर्वश्रेष्ठ बीज और अत्याधुनिक मार्केटो-इरिगेशन टैक्नोलॉजी शामिल है।

फसलों की सम्पूर्ण सुरक्षा के लिए

पायोनियर

के शक्तिशाली उत्पाद अपनाएं














PIONEER PESTICIDES PVT. LTD.

SCO 82-83, 2nd Floor, Sector-8C, Madhya Marg, Chandigarh Ph : 0172-2549719, 2549819, 254986
E-mail: headoffice@pioneerpesticides.com, Website : www.pioneerpesticides.com

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्प्लैक्स, गऊशाला रोड, नजदीक शेर
पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : kdpublishings@yahoo.co.in

वर्ष : 07 अंक : 31

तिथि : 05-08-2023

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बण्डा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग

एक्ता कम्प्यूटरज़ पटियाला

लाइकेनिडाई तितलियां सबसे ज्यादा संकट में हैं

हीटवेव : अपने तापमान पर नियंत्रण खो रही हल्के रंग की तितलियां, लुप्त हो सकती हैं

यूरोप, अमेरिका और चीन लू और हीटवेव से झुलस रहे हैं। भीषण गर्मी से इंसानों की मौत हो रही है। दूसरी

तरफ कई जीव ऐसे भी हैं, जो अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जंग लड़ रहे हैं। सबसे अधिक खतरा हल्के रंग की तितलियों को है। मौसम के जीवों पर पड़ने वाले असर को समझने के लिए जर्नल ऑफ एनिमल इकोलॉजी ने एक अध्ययन किया है। इसमें सामने आया कि लाइकेनिडाई प्रजाति की तितलियों के लिए लगातार गर्म होता मौसम सबसे ज्यादा खतरनाक साबित हो रहा है, क्योंकि वे अपने तापमान पर नियंत्रण नहीं रख पाती। इसमें भी छोटे आकार और हल्के रंग की तितलियों के लिए संकट ज्यादा है। एनिमल इकोलॉजिस्ट कहते हैं कि छोटे जीवों और



कीड़ों के लिए गर्मी सहनशीलता में आकार बड़ी भूमिका निभाता है। थर्मल बफरिंग को समझने के लिए छह

परिवारों की 54 प्रजातियों की 1,334 तितलियों को अध्ययन किया गया। इससे पता चला कि जब गर्मी बढ़ती है, तो तितलियां हवा के तापमान के अनुसार, खुद को ढाल लेती हैं। इस प्रक्रिया को थर्मल टॉलरेंस और थर्मल बफरिंग कहा जाता है। कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से पीएच.डी. कर रहे एस्म एंश-जेपसन का कहना है कि बड़े पंखों वाली तितलियां गर्मी को ज्यादा सह पाती हैं और ठंडे क्षेत्र में आने पर खुद को जल्दी अनुकूलित कर पाती हैं। छोटे पंखों वाली तितलियां बदलाव को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाती हैं।

गुरु साहिबान के वचनों से प्रेरित हो शुरु किया आम लगाने का सफर बन गया मिशन कॉलेज में बरसों प्रोफेसरी की, अब आम के जरिये ला रहे फलदार हरियाली

लगनपूर्वक मेहनत करने से कठिनतम कार्य भी सरल लगते हैं। ऐसी ही एक कहानी सामने आई है। बठिंडा के डॉ. भूपिन्द्र सिंह ने मलोट के इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट में बरसों बच्चों को पढ़ाया, अब अपने शौक, जुनून तथा दृढ़ इच्छा शक्ति से आम पौधारोपण के जरिये पर्यावरण संरक्षण कर रहे हैं। अपनी इस खुबी के चलते वह इलाके में 'मैगो मैन' के नाम से भी जाने जाते हैं।

वह बताते हैं कि तख्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो स्थित गुरुद्वारा साहिब

8 सालों के दौरान सार्वजनिक जगहों पर आम के हजारों पौधे लगाए, जिनमें अनेक बन गए पेड़

में सरोवर के इर्द-गिर्द आम के कई पेड़ हैं। सिख गुरु साहिबान ने भी वचन किए थे कि मालवा की धरती पर आम समेत अन्य पेड़-पौधे होंगे। इससे प्रेरित होकर उनके मन में आया कि उन्हें भी लोगों को इसके प्रति जागरूक करना चाहिए। साल 2015 में उन्होंने आम के पौधे लगाने शुरू कर दिए। जब उन्होंने यह मुहिम शुरू की तो कई लोगों ने कहा कि बठिंडा की जलवायु आम के अनुकूल नहीं है। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। सबसे पहले उन्होंने सितम्बर 2015 में बारादरी, पटियाला स्थित हॉर्टिकल्चर नर्सरी से आम के 700 पौधे लाकर बठिंडा में अलग-अलग जगह लगाने शुरू किए। तत्पश्चात् उन्होंने प्लॉट मैगो ट्रीज फॉर एवरग्रीन सोसायटी बठिंडा बनाई, जिसमें 15 से अधिक सदस्य हैं और मालवा से संबंधित जिलों के करीब 4000 लोग इससे जुड़े हैं। ये उनसे प्रेरित होकर इस मुहिम में सहयोग कर रहे हैं।



...ताकि हर घर में पहुंचे आम की महक

ज़िले भर में 5 वैरायटियों के लगाए 8-10 हजार पौधे

मैगो-मैन के अनुसार, हॉर्टिकल्चर विभाग के अधिकारियों से जानकारी मिली कि आम के पौधे लगाने की बजाय उनके सीड्स या गुठलियों को सीधे ज़मीन में लगा कर उनसे पौधे तैयार कर सकते हैं। इसके बाद उन्होंने गुठलियों से भी पौधे तैयार करने शुरू किए। वह आम्रपाली, दशहरी, एपल शेप, लंगड़ा और चौसा वैरायटियों के पौधे लगाते हैं। पहली तीन वैरायटियों के पेड़ गुठलियों से तैयार हो जाते हैं और लंगड़ा व चौसा की पौधे तैयार कर रोपनी पड़ती है। वह बठिंडा के दादी-पोती पार्क में ही 35-40, टेलीफोन कॉलोनी में 70-80, सिविल लाइंस में 25-30, मिनी सेक्रेटरिएट में 25-30 पौधे लगा चुके हैं।

बठिंडा ज़िले में 8 से 10 हजार पौधे लगा चुके हैं, जिनमें से अनेक तो पेड़ बन चुके हैं और फलों से लकड़क होते हैं। पूछने पर डॉ. भूपिंदर सिंह बताते हैं, "मुझे खाने में दशहरी पसंद है। इसके पेड़ पर फल भी खूब लगता है।"

परिवार : 54 वर्षीय डॉ. भूपिंदर सिंह मूल रूप से

खुडियां गांव (जिला मुक्तसर साहिब) के रहने वाले हैं। वह अंग्रेजी में पीएच.डी. हैं। उन्होंने गुरु तेग बहादुर खालसा पॉलीटेक्नीक एंड इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट, मलोट में प्रोफेसरी की। वह परिवार के साथ बठिंडा में निवास करते हैं। परिवार के माता-पिता, पत्नी, बेटा व बेटी हैं।

अपील : गुठली न फेंकें, ज़मीन में दबा दें, बनेगा पेड़ और लगेंगे फल

वह बताते हैं कि उनके सर्कल में जब भी जन्मदिन या खुशी का मौका होता है, तो उनके यहां आम के पौधे निःशुल्क लगाए जाते हैं; किसी के भोग समागम पर गुरुद्वारा या मंदिर में पौधे लगाए जाते हैं; यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह अपने खेत में पौधे लगाना चाहता है, तो उसकी इच्छा के अनुरूप वहां जाकर भी वह पौधे लगाते हैं। अभी आम का सीजन चल रहा है। लोग आम खाकर उसकी गुठली को फेंकने के बजाय अपने घर अथवा सटीक जगह पर ज़मीन में दबा दें, जिससे पौधा तैयार होगा, जो आगे चल कर फल देगा। इससे ना केवल हरियाली होगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी निखरेगा।

मुख्य पोषक तत्वों की कमी के लक्षण जान कर उनकी कमी को दूर करके अधिकतम पैदावार ली जा सकती है

कपास की अच्छी पैदावार लेने के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा मिट्टी में होना आवश्यक है। अगर मिट्टी में ये पोषक तत्व फसल की आवश्यकता अनुसार नहीं हैं और

आवश्यक ध्यान ना देने से फसल पर इनकी कमी के चिन्ह दिखाई देने लगते हैं तथा पैदावार भी प्रभावित होती है। कपास में सूक्ष्म पोषक तत्व प्रबंधन करके कपास की अधिक

डॉ. रघुबीर सिंह, खण्ड कृषि अधिकारी बरवाला, जिला हिसार, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, पंचकूला तथा डॉ. अजीत सांगवान, जिला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, सदलपुर, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

कपास फसल लगाने के पूर्व या जब भी फसल में कमी देखी जाए, तो इनकी उचित मात्रा देने से अच्छी फसल लेने के लिए अति आवश्यक है। पौधे को कुल 18 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। आज से चार-पांच दशक पूर्व किसान खाद के तौर पर केवल कम्पोस्ट खाद का इस्तेमाल करते थे और वर्ष में एक खेत में एक ही फसल लेने से पोषक तत्वों की कमी फसल में महसूस नहीं होती थी। आजकल समय की मांग को देखते हुए किसानों ने सघन फसल-चक्र व साथ ही साथ फसल की अधिक उत्पादन देने वाली किस्मों को अपना लिया है। फसलों की पोषक तत्वों की मांग को किसान रासायनिक खादों के उपयोग से पूरी करते हैं। अक्सर किसान मुख्य पोषक तत्व जैसे की नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश तो फसल को दे देते हैं। कपास उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में मुख्य रूप से और उत्तर प्रदेश में भी कुछ क्षेत्रों में इसका उत्पादन छोटे पैमाने पर करते हैं। इन राज्यों में कपास-गेहूँ फसल-चक्र में सिंचित स्थिति में उगाई जाती है। दोनों फसलों

पैदावार प्राप्त की जा सकती है। हरियाणा में कपास एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है। कपास की फसल में पोषक तत्वों का सही मात्रा और उचित समय पर डालना अच्छी व गुणवत्ता वाली फसल लेने के लिए अति आवश्यक है। कपास फसल मुख्य पोषक तत्वों की कमी के लक्षणों की जानकारी होने से किसानों पोषक तत्वों को पौधों को समय रहते उपलब्ध करवा कर कपास का उत्पादन बढ़ा सकते हैं। कपास की फसल को पोषक तत्वों की आवश्यकता पौधों के बुवाई के समय से लेकर फसल की कटाई ज़रूरत रहती है, परन्तु इनकी आवश्यकता पौधे की बढवार, बौकी, फूल बनते समय से लेकर टिण्डे बनने तक अधिक मात्रा में ज़रूरत रहती है।

नाइट्रोजन तत्व : नाइट्रोजन को यूरिया उर्वरक रूप में डालने से इसकी कमी दूर हो जाती है। खेत में डाली गई उसकी पूरी मात्रा में पौधों को नहीं मिल पाती, सूर्य की गर्मी से भी उड़ जाना तथा पानी के साथ कपास के पौधों की जड़ों से दूर चली जाती है, इसलिए यूरिया की सही मात्रा, मिट्टी की जांच अनुसार

कपास में पोषक तत्वों का प्रबंधन कैसे करें

समय रहते बुवाई के 90 दिनों तक डाल दें। इसके बाद नाइट्रोजन कमी के लक्षण दिखाई दें, तो 2.5 प्रतिशत यूरिया यानी 2.5 किलोग्राम यूरिया 100-125 लीटर पानी में मिला कर कपास फसल पर छिड़काव 10 से 15 दिन के अंतराल पर करने से यूरिया की कमी दूर की जा सकती है।

फास्फोरस तत्व : फास्फोरस की मिट्टी में घुलनशीलता बहुत कम होती है। इसके लिए फास्फोरस जड़ों के पास जाना चाहिए। इसकी कमी के लक्षण स्पष्ट दिखाई नहीं देते हैं तथा गर्मी के होने पर इसकी आवश्यकता अधिक मात्रा में होती है। फास्फोरस जड़ों का फैलाव करता है तथा पौधों की बढवार के लिए अन्य पोषक तत्वों की उपलब्धता करवाने में सहायक है। यह पोषक तत्व भी पौधों के जमाव से लेकर उनके पकने तक काम आता है।

फास्फोरस की कमी के लक्षण व उपाय : फास्फोरस की कमी से पौधे छोटे, कम शाखाओं वाले तथा पत्तियां छोटी, गहरे हरे रंग और बैंगनी हरा दिखाई देता है। इसकी कमी हमेशा जून के अंतिम सप्ताह या जुलाई के प्रथम सप्ताह में दिखाई देती है। इसकी कमी को बुवाई के समय या निराई व गुड़ाई के समय बुवाई करने से तथा डी.ए.पी. 2 प्रतिशत यानी 2 किलोग्राम डी.ए.पी. तथा 2.5 किलोग्राम यूरिया का घोल बना कर छिड़काव करने से फास्फोरस की कमी व यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है।

पोटाश तत्व : पोटाश खाद की आवश्यकता टिंडा बनने में ज्यादा

संकर किस्मों में 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से बुवाई के समय डालना चाहिए। अगर इसके बाद कमी के लक्षण दिखाई दें, तो 1 किलोग्राम प्रति 13:00:45 एन.पी.के. और पोटाशियम नाइट्रेट के दो या तीन छिड़काव 10-15 दिन के

लोहा सूक्ष्म तत्व : लोहे की कमी के लक्षण नई पत्तियों पर दिखाई देते हैं। शिराओं के बीच पत्तियों का रंग उड़ जाता है और पूरी पत्ती सफेद दिखाई देने लगती है। उसकी कमी को पूरा करने के लिए 0.1 प्रतिशत तथा सल्फेट का 10 से 15



अंतराल पर करें।

गंधक (सल्फर) तत्व : गंधक पौधों में प्रोटीन का मुख्य अवयव होता है, क्योंकि कपास एक रेशे के साथ-साथ तेल प्रदान करने वाली फसल है। इसलिए इस फसल में इसकी आवश्यकता अधिक होती है। गंधक की कमी के लक्षण व उपाय गंधक की कमी से ऊपरी नई पत्तियां पीली तथा सफेद पीली व आकार कम हो जाता है। कपास में सूक्ष्म इस पोषक तत्व की कमी की वजह से फसल में टिण्डे कम बनते हैं, जिससे उत्पादन प्रभावित होता है। इसकी पूर्ति गोबर की खाद या सिंगल सुपर फास्फेट या जिंक सल्फेट द्वारा की जा सकती है। गंधक की कमी को दूर करने के लिए मिट्टी में 100 किलोग्राम जिप्सम प्रति एकड़ के हिसाब से डाला जा सकता है।

जस्ता (जिंक) सूक्ष्म तत्व : इसकी कमी के लक्षण व उसके उपाय : कपास में सूक्ष्म पोषक तत्व जस्ते की कमी से नई पत्तियों की शिरायों के मध्य में पर्णहीनता दिखाई देती है। पत्तियां आमतौर पर छोटे आकार की और गुच्छेनुमा हो जाती हैं। जिंक की कमी के लक्षण बुवाई के 20-25 दिन बाद दिखाई देने लगते हैं। नीचे की पत्तियों में शाखाओं के बीच में पीले धब्बे आ जाते हैं। बाद में कल्थई रंग के धब्बे भी बन जाते हैं। पत्तियां छोटी और मोटी होकर ऊपर की तरफ मुड़ जाती हैं। कपनुमा आकृति बन जाती है। पौधे झाड़ी की तरह दिखाई देते हैं। इसकी पूर्ति के लिए फसल में या तो बुवाई से पूर्व मिट्टी में 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति एकड़ डालना चाहिए या खड़ी फसल में जिंक की कमी को दूर करने के लिए 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट और 2.5 प्रतिशत यूरिया के घोल को 10 से 15 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करने से उसकी कमी को पूरा किया जा सकता है।

दिन के अंतराल पर एक या दो छिड़काव करने से लोहे की कमी को पूरा किया जा सकता है।

मैगनीज सूक्ष्म तत्व : मैगनीज की कमी से पौधे की बढवार रुक जाती है तथा पौधों पर पत्तियां कम और छोटी रह जाती हैं। फूल देरी से आते तथा गिर जाते हैं व टिंडे नहीं बनते हैं। मैगनीज के लक्षण सबसे पहले बीच वाली पत्तियों में दिखाई देते हैं। पत्तियों का रंग हल्का हरा हो जाता है तथा शिरायें हरी दिखाई देती हैं। इसकी कमी को दुरुस्त करने के लिए एक किलोग्राम मैगनीज सल्फेट को 200 लीटर पानी में मिला कर 10 दिन के अंतराल पर एक या दो छिड़काव से पूरा किया जा सकता है।

मैगनीशियम सूक्ष्म तत्व : यह क्लोरोफिल का एक अवयव है और पौधे की प्रकाश संश्लेषण क्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है एवं एंजाइम अभिक्रिया के लिए आवश्यक होता है। कपास में सूक्ष्म इस पोषक तत्व की कमी से पत्तियों की शिराओं में लालपन आ जाता है। खेत में बुवाई से पहले 8-10 टन प्रति एकड़ की दर से गोबर की खाद डालनी चाहिए या इसको फसल में मैगनीशियम सल्फेट के छिड़काव द्वारा कमी को दूर किया जा सकता है।

बोरॉन सूक्ष्म तत्व :

बोरॉन की कमी के लक्षण व उपाय : कपास में सूक्ष्म पोषक तत्व बोरॉन की कमी के लक्षण अंतिम कलिकाएं और नई पत्तियां रंगहीन होकर बाद में मर जाती हैं। बोरॉन की कमी टिंडे बिना पके गिरने लग जाते हैं या पौधों पर ही सूख जाते हैं। तने छोटे रह जाते हैं और पौधे पूर्ण वृद्धि नहीं कर पाते हैं। फसल में बोरॉन का अभाव 0.3 प्रतिशत बोरेक्स के एक प्रतिशत का एक या दो बार 10-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करने से इसकी कमी को दूर किया जा सकता है।



की उन्नत किस्मों लेते हैं और सुविधानुसार रासायनिक खादों का इस्तेमाल करते हुए अक्सर सूक्ष्म पोषक तत्वों को व कम्पोस्ट खाद को कम महत्व देते हैं, जिससे फसल में द्वितीय एक सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी अक्सर देखी जाती है, परिणामस्वरूप पैदावार प्रभावित होती है। द्वितीय पोषक तत्वों में कैल्शियम, मैगनीशियम व सल्फर की कमी देखने को मिलती है। सूक्ष्म पोषक तत्वों जस्ता, लोहा, मैगनीज, बोरॉन सूक्ष्म तत्वों की केवल बहुत थोड़ी सी मात्रा पर्याप्त रहती है, जिससे मिट्टी इन फसलों की पोषक तत्वों की मांग पूरी नहीं कर पाती है। अतः इन पोषक तत्वों को सूक्ष्म पोषक तत्व कहते हैं। कपास में सूक्ष्म पोषक तत्व या लेकिन सूक्ष्म तत्वों पर

तथा सिंचाई के तरीकों के हिसाब से डालना चाहिए। कपास की अच्छी पैदावार के लिए पोषक तत्वों की मात्रा को हमेशा सही अनुपात में मिलाएं। अत्याधिक यूरिया की मात्रा डालने से रस चूसक कीटों का प्रकोप बढ़ जाना, कपास की समय अवधि बढ़ जाना, रूई भी कम मिलना।

नाइट्रोजन की कमी के लक्षण और उपाय : नाइट्रोजन की कमी से पौधे कमजोर हो जाना, कम शाखा होना, वृद्धि दर कम हो जाना, पुराने पत्ते पीले पड़ना, पीलापन अधिक समय रहने से पत्ते के किनारे लाल हो जाना, पौधा छोटा रह जाना और फूल, बौकी के गिरने की समस्या बनी रहती है। पत्तों का लाल होना टंड के साथ बढ़ता जाएगा। नाइट्रोजन की कमी पूरा करने के लिए यूरिया

होती है। हरियाणा की मिट्टी में पोटाश की कमी नहीं है, परन्तु लगातार कपास-गेहूँ चक्र के कारण कमी हो जाती है। पोटाश मिट्टी में घुलनशीलता नाइट्रोजन व फास्फोरस के बीच की होती है। मिट्टी में उसको मिट्टी जांच के बाद ही इस पोषक तत्व को आवश्यकता के अनुसार डालना चाहिए।

पोटाश की कमी के लक्षण व उपाय : पोटाश की कमी से नीचे की पत्तियों का रंग पहले हल्का हरा हो जाता है और बाद में पत्तियों की मध्य शिरा का भाग पूरी तरह बैंगनी हो जाता है, जबकि अन्य शिरायें पीली बनी रहती हैं तथा पत्तियां सख्त हो जाती हैं। पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ जाती हैं, बाद में सारी पत्तियां लाल हो जाती हैं तथा फिर सूख जाती हैं। टिंडे खिलते नहीं हैं।

फल और सब्जियों का प्रसंस्करण एवं प्रौद्योगिकी



फल एवं सब्जियां मानव आहार के आवश्यक घटक हैं। ये पौष्टिक पदार्थ प्रदान करते हैं। इनसे शरीर को मुख्य रूप से कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज, जल व रेशा आदि प्राप्त होता है। भारत, फल और सब्जियों का उत्पादन करने वाला दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। जलवायु की विविधता के कारण पूरे वर्ष इनका उत्पादन हमारे देश के अलग-अलग क्षेत्रों में होता है। इनमें जल की मात्रा अधिक होने से ये शीघ्र नष्ट होने वाले उत्पाद होते हैं। ये आसानी से सूक्ष्मजीवों जैसे जीवाणु, फफूंद और खमीर द्वारा खराब कर दिए जाते हैं। एंजाइम, रासायनिक क्रिया आदि भी इन्हें क्षतिग्रस्त एवं गुणवत्तारहित कर देते हैं। क्षतिग्रस्त होने से बचाने के लिए इनका परिरक्षण अति आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार 20 से 30 प्रतिशत फल एवं सब्जियां उत्पादन क्षेत्र से उपभोक्ताओं के पास पहुंचने के पहले नष्ट हो जाती हैं। भारत में 2 प्रतिशत से भी कम फल और सब्जियों का प्रसंस्करण किया जाता है, जबकि विकसित देशों में यह 50 से 80 प्रतिशत तक है। अतः यह स्पष्ट है कि भारत में फल और सब्जियों के प्रसंस्करण में उद्यमिता के विकास की अपार संभावनाएं हैं।

एक ही फल को विभिन्न उत्पादों में प्रसंस्करित किया जा सकता है, जिसे जरूरत के हिसाब से देश अथवा विदेशों में भेजा जा सकता है। इससे विदेशी मुद्रा की प्राप्ति की जा सकती है। भारत से निर्यात किये जाने वाले उत्पादों में प्रसंस्करित फल एवं सब्जियों की शामिल हैं। इनमें प्रमुख हैं-फल गुदा या पल्प, फल रस, चटनी, सूखे हुए एवं प्रशीतित फल व सब्जियां आदि।

फल और सब्जियों मौसमी होती हैं और किसी खास मौसम में इनकी प्रचुर मात्रा उपलब्ध होती है। अतः परिरक्षण द्वारा मूल्य संवर्धन सहित इनकी भंडारण क्षमता को बढ़ाकर उपयोगी उत्पाद के रूप में वर्षभर इनका लुप्त उठाया जा सकता है। फलों एवं सब्जियों को सूक्ष्मजीवों से बचाने के लिए दो मूल सिद्धांत हैं। सबसे पहले इनके सूक्ष्मजीवों को नष्ट करना चाहिए और दूसरा बाहर के सूक्ष्मजीवों द्वारा होने वाले संक्रमण को रोकना चाहिए। दूसरे सिद्धांत के अनुसार इनके वातावरण में परिवर्तन कर दिया जाता है, जिससे अनचाहे जीवों की वृद्धि को रोका जा सकता है या कम कर दिया जाता है। इन्हीं दो सिद्धांतों को अपनाकर फल एवं सब्जियों का परिरक्षण करना चाहिए। परिरक्षण के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है कि परिरक्षित किये जाने वाले उत्पाद के मौलिक अभिलक्षण में न्यूनतम परिवर्तन हो। इसके साथ ही परिरक्षण के बाद परिरक्षित पदार्थ की पौष्टिकता भी बनी रहनी चाहिए।

फल और सब्जियों के परिरक्षण की अनेक विधियां हैं। इनका प्रयोग फल और सब्जियों की अवस्था, किस्म व उपयोग, परिरक्षण की अवधि, पौष्टिकता इत्यादि कई बातों पर निर्भर करता है।

विभिन्न फलों एवं सब्जियों

का परिरक्षण टमाटर से निर्मित संरक्षित पदार्थ :- सब्जियों से तैयार होने वाले संरक्षित उत्पादों में टमाटर का स्थान प्रमुख है। इससे सॉस, कैचप (चटनी), टमाटर क्रश, अचार आदि तैयार कर मूल्य संवर्धन किए जा सकते हैं।

फलों के रस एवं शर्बत का परिरक्षण :- गर्मियों में फलों का रस



एवं शर्बत का प्रचलन अब घर-घर में बढ़ता जा रहा है। विज्ञान की प्रगति ने अब फलों की उत्पादकता इतनी बढ़ा दी है कि इनसे निर्मित उत्पादों का संरक्षण अनिवार्य हो गया है।

फलों को रस एवं शर्बत दोनों रूप में पेय पदार्थ की तरह उपयोग के लिए संरक्षित किया जाता है। आम, अनन्नास, अमरूद, सपोंटा, जामुन, लीची, बेल, नारंगी एवं नींबू के रस एवं शर्बत (स्कवैश) को संरक्षित कर रखा जा सकता है।

रस का संरक्षण :- फलों के रस को प्रति लीटर 0.12 प्रतिशत पोटेशियम मेटाबाई सल्फाईट परिरक्षक का प्रयोग करके संरक्षित किया जाता है। जामुन का रस चूँकि बैंगनी रंग का होता है। इसलिए इसके आकर्षक रंग को बचाए रखने के लिए सोडियम बेनजोएट परिरक्षक 0.10 प्रतिशत डाला जाता है। नारंगी एवं नींबू के रस संरक्षण में, रस को बहुत हल्का गर्म किया

जाता है अन्यथा स्वाद बिगड़ सकता है। नारंगी अथवा नींबू का रस निकालने के लिए सिट्रस जूस एक्स्ट्रैक्टर एवं अनन्नास के लिए बास्केट प्रेस का इस्तेमाल करना चाहिए।

शर्बत का संरक्षण :- प्रायः सभी रसदार फलों से 'स्कवैश' बनाया जा सकता है। प्रति 5 कि.ग्रा. स्कवैश में 3 ग्राम पोटेशियम मेटाबाई सल्फाईट परिरक्षक का प्रयोग किया जाता है, परंतु जामुन के लिए 0.02 प्रतिशत सोडियम बेनजोएट का प्रयोग होता है। इसे बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है।

फल का रस :- 1 कि.ग्रा. (छना हुआ)।

चीनी :- डेढ़ कि.ग्रा., नींबू एवं नारंगी में दोगुनी चीनी डाली जाती है।

पानी :- 750 ग्राम (चीनी का आधा)।

साईट्रिक एसिड :- रस के खट्टेपन के अनुसार ढाई से पांच ग्राम प्रति कि.ग्रा. रस के लिए, परंतु नींबू एवं नारंगी में इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती है।

आम से निर्मित संरक्षित उत्पाद :- आम एक ऐसा फल है जिसका उपयोग हम टिकोले से लेकर पूर्ण पके हुए विकसित फलों के रूप में भी करते हैं। इस फल से विभिन्न प्रकार के संरक्षित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं।

कच्चे आम का स्कवैश :- कच्चे आम (टिकोला) कड़े होते हैं उनसे भी स्कवैश बनाए जाते हैं। यह गर्म वातावरण से उत्पन्न होने वाले विकारों जैसे 'लू' आदि के लिए उपयुक्त है।

आम की जेली :- अधपके आमों की 'जेली' अच्छी होती है। टिकोलों से भी जेली बनाई जा सकती है, जेली बनाते समय अगर आम काफी खट्टा है तो साईट्रिक एसिड डालने की आवश्यकता नहीं है। मिठे आम के रस में 5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. चीनी की दर से साईट्रिक एसिड जेली पकाते समय 102° सेल्सियस रस का तापमान पहुंचने पर डाला जाता है।

आम का जैम :- कच्चे एवं पके दोनों प्रकार के आमों से 'जैम'

तैयार होता है। इसमें 0.02 प्रतिशत सोडियम बेनजोएट परिरक्षक थोड़े पानी में घोलकर मिलाते हैं। आम का एसिड (सुगंध) डालकर इसे स्वादिष्ट बनाया जा सकता है।

आम का हलवा :- जैम की तरह ही चीनी मिलाकर पके आम का हलवा तैयार किया जाता है। प्रति कि.ग्रा. गूदे में 50 ग्राम घी डालकर हलवा तैयार किया जाता है। इसे 0.05 प्रतिशत सोडियम बेनजोएट डालकर संरक्षित किया जाता है।

आम का पनीर का बर्फी :- कच्चे आमों से चटनी को तैयार किया जाता है। चटनी के लिए एक कि.ग्रा. गूदे में चीनी 1 कि.ग्रा. नमक, 100 ग्राम, अदरक 100 ग्राम, सरसों तेल 100 ग्राम, लाल मिर्च 50 ग्राम पीसकर एवं सिरका 500 ग्राम डाला जाता है। ज्यादा दिनों तक रखने के लिए 0.02 प्रतिशत सोडियम बेनजोएट मिलाया जाता है।

आम का मुरब्बा :- मुरब्बा बनाने के लिए कच्चे आम का प्रयोग होता है। आम की छीलकर बड़े टुकड़ों में काटकर इसका मुरब्बा तैयार किया जाता है।

आम की डिब्बाबंदी :- पके कलमी आम की डिब्बाबंदी की जाती है। सीपिया, लंगड़ा, अल्फांसो, अमन, दशहरी एवं फजली आम की डिब्बाबंदी अच्छी होती है। आम की डिब्बाबंदी कारखाने में ही की जा सकती है।

घरेलू शीतगृह में सब्जी का संरक्षण :- ईट, बालू, बोरा या खस की पट्टी की सहायता से बहुत ही कम खर्च में यह शीतगृह घरेलू या बड़े स्तर पर बनाया जा सकता है। फल एवं सब्जी विक्रेताओं के लिए फलों एवं सब्जियों को ज्यादा दिनों तक ताजा रखने के काम में आते हैं।

सब्जी की मात्रा के अनुसार जमीन पर एक ईट की चौड़ाई की दो अलग-अलग दीवारें 3 इंच की दूरी पर बनाई जाती हैं। ये दीवारें 3 फुट ऊंची रहनी चाहिए। इस प्रकार एक दोहरी दीवार वाला चैबर तैयार हो जाता है। दोनों दीवारों के बीच की जगह को बालू से भर दिया जाता है। चैबर को ढकने के लिए खस या पुराने कोष की पट्टी बनाई जाती है। बालू एवं पट्टी को भिगोए रखा जाता है, जिसके लिए ऊंचाई पर बाल्टी में पानी भरकर रख दिया जाता है तथा पाईप की मदद से बालू एवं पट्टी को भिगोए रखने की व्यवस्था की जाती है। इसके लिए पाईप में जगह-जगह छेद करके दीवारों के बीच बालू की ऊपरी सतह पर छोड़ दिया जाता है। पट्टी को पानी का छीटा मारकर या भीगा हुआ बोरा डालकर ढंका रखा जाता है। ऐसा करने से इसी शीतगृह का तापमान कमरे की अपेक्षाकृत कम हो जाता है एवं अंदर की आर्द्रता बढ़ जाती है। खासकर गर्मी के दिनों में उक्त शीतगृह में टमाटर 12 दिनों तक, फूलगोभी 8-10 दिनों तक, पालक 2-3 दिनों तक, भिंडी 7-10 दिनों तक एवं परवल 8-10 दिनों तक अच्छी स्थिति में रहता है।

इस तरह इस विधि को अपनाकर फल एवं सब्जियों की क्षति को रोककर इनकी उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

फल एवं सब्जियों का सुखौता :- फल और सब्जियों को अच्छी प्रकार साफ पानी से धोकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटने के बाद तेज धूप में सुखाते हैं। सुखावक यंत्र में सुखाने में इनमें उपस्थित पौष्टिकता बची रहती है। इस तरह के सुखावन का कार्य वर्षा एवं बदली के मौसम में भी किया जा सकता है। सुखये गये उत्पादों का भंडारण पॉलीथीन के छोटे-छोटे थैले/पाउच में सील कर सूखे स्थानों में करना चाहिए।

नारंगी का मार्मलेड :- यह जेली के समान नारंगी के रस से बना, जमा हुआ पदार्थ होता है, जिसमें फलों के छिलके भी डले होते हैं।

नारंगी के छिलके की कैडी :- नारंगी के छिलकों से भी कैडी बनाई जाती है। अच्छे, रोग एवं धब्बारहित नारंगी के फलों से यह तैयार की जाती है।

अमरूद की जेली :- अमरूद की जूली बनाने के लिए पूर्णरूप से विकसित (जो हरे एवं कड़े हों) अमरूद लिया जाता है। इन्हें साफ करके गोल-गोल टुकड़ों में उबाल कर जूस निकाला जाता है। इससे जेली तैयार की जाती है। जेली तैयार करते समय जूस को पकाते हुए इसका तापमान 100° सेल्सियस तक पहुंच जाने पर 4-5 ग्राम साईट्रिक एसिड प्रति कि.ग्रा. जूस में मिलाते हैं। 106°-107° सेल्सियस पर जब जूस का तापमान पहुंच जाए तो उसे उतार लिया जाता है।

अजोला की खेती - एक वरदान

के लिए इस गड्डे को प्लास्टिक शीट से ढक देते हैं। जहां तक संभव हो सके, इसके लिए पराबैंगनी किरणरोधी प्लास्टिक शीट का प्रयोग करना चाहिए। प्लास्टिक शीट सिलपोलीन एक पॉलीथीन तारपोलीन है, जोकि प्रकाश की पराबैंगनी किरणों के लिए प्रतिरोधी क्षमता रखती है। सीमेंट की टंकी या पक्के स्थान पर भी अजोला को उगाया जा सकता है। इसके लिए प्लास्टिक शीट बिछाने की आवश्यकता नहीं होती है।

3. इसके बाद गड्डे में छानी हुई 10-15 किलोग्राम मिट्टी को समान रूप से फैलाया जाता है। इसके अलावा 10 लीटर पानी में 2 किलोग्राम गोबर और 30 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट का घोल बना कर गड्डे में



डाल दिया जाता है।

4. पानी का स्तर 10-12 सेंटीमीटर तक होना चाहिए। इसके बाद 500-1000 ग्राम अजोला कल्चर्ड बीज सामग्री को पानी के ऊपर समान रूप से फैला दिया जाता है।

5. पहली बार अजोला का कल्चर किसी भी प्रतिष्ठित स्थान से खरीदना चाहिए। यह बहुत तेजी से बढ़ता है और 10-15 दिनों में पूरे गड्डे की सतह को ढक लेता है।

6. अजोला को तेजी से बढ़ने के लिए और 500-1000 ग्राम प्रति दिन उपज बनाए रखने के लिए सप्ताह में एक बार 20 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट और लगभग एक किलोग्राम गाय के गोबर का मिश्रण डालना चाहिए। अजोला में खनिज पदार्थ को बढ़ाने के लिए सप्ताह के अंतराल पर लोहा, तांबा, मैग्नीशियम और गंधक आदि से युक्त सूक्ष्म पोषक मिश्रण भी मिलाया जा सकता है।

7. क्यारी में नाइट्रोजन के जमाव को रोकने के लिए हर 10 दिन में एक बार 25-30 प्रतिशत पानी को ताजे पानी से बदलने की जरूरत होती है।

8. अजोला बहुत तेजी से बढ़ता है और 10-15 दिनों में पूरे गड्डे को कवर कर लेता है। इसे प्रति दिन 100-1500 ग्राम छलनी या बांस की टोकरी से पानी के ऊपर से बाहर निकाला जा सकता है।

9. अजोला तैयार करने की टंकी के पानी के पी.एच. मान का समय-समय पर जांच करते रहें। इसका पी.एच. मान 5.5-7.0 के मध्य होना उत्तम रहता है।

अजोला की विशेषता

अजोला तेजी से बढ़ने वाली वह जलीय फसल है, जिसको किसान छोटे स्थान पर कम खर्च में उत्पादन कर सकता है। यह पशुओं के लिए पौष्टिक आहार का अच्छा साधन है। इसके द्वारा किसान की बाहरी आहार की बचत हो सकती है। अजोला उत्पादन के लिए किसी भी आधुनिक तकनीकी की जरूरत नहीं होती है। इसलिए हर किसान इसका उत्पादन करके अपनी आमदनी दोगुनी कर सकता है।

पंजाब में बदलता रहा मौसम, लेकिन गिरा नहीं न्यूनतम पारा, 44 प्रतिशत सरप्लस बारिश जुलाई में 20 दिन एक्टिव रहा मौनसून, बारिश का 22 साल का रिकॉर्ड टूटा, 231.8 एम.एम. बरसे बादल

मौनसून के दो महीने पूरे हो चुके हैं और इस बार इन दोनों महीनों में झमाझम बारिश देखने को मिली है। जुलाई की बारिश से तो कई जिलों में इस बार बाढ़ जैसे हालात

इस बार पार हुआ है। 2001 के बाद ही सबसे ज्यादा दिन मौनसून के जुलाई में देखने का अनुमान मौसम विभाग ने बताया है। इस बार 31 में से 20 दिन मौनसून एक्टिव रहा है,

से 38 प्रतिशत सरप्लस है। 1976 से लेकर 2022 तक कई जिलों में औसत न्यूनतम पारा 12 से लेकर 20.7 डिग्री रहा, लेकिन इस बार न्यूनतम पारा मौसम के एक्टिव रहने से गिर नहीं पाया व औसत न्यूनतम पारा 23.5 डिग्री तक रहा है।

अगस्त-सितम्बर में सामान्य रहेगा मौनसून

अब मौनसून सीज़न के आगामी दो महीने अगस्त और सितम्बर में ज्यादा बारिश देखने को नहीं मिलेगी। सामान्य बारिश होने के आसार हैं। मौसम विभाग के अनुसार अगस्त के पहले सप्ताह में अच्छी बारिश होगी, लेकिन बाद में आगे पूरे महीने सामान्य से थोड़ी कम ही होने का अनुमान है।

जुलाई में ऐसा रहा मौसम

1 जुलाई से 31 जुलाई तक 231.8 एम.एम. बारिश हुई। सामान्य पूरे महीने की बारिश का आंकड़ा 161.4 एम.एम. होता है, जबकि 44 प्रतिशत तक इस बार सरप्लस बारिश हुई है।

देश में अब तक कोटे से 5 प्रतिशत ज्यादा बारिश

देश में जुलाई की तरह अगस्त-सितम्बर में भी मौनसून सामान्य रहेगा। भारतीय मौसम विभाग ने जारी मासिक पूर्वानुमान में बताया कि इन दो महीनों में पूर्व-मध्य, पूर्व व उत्तर-पूर्व भारत में सामान्य से थोड़ी ज्यादा तो प्रायद्वीपीय भारत व उत्तर-पूर्व भारत में सामान्य से थोड़ी ज्यादा तो प्रायद्वीपीय भारत व उत्तर-पश्चिमी, मध्य भारत में सामान्य से कम बारिश के आसार हैं। अब तक 467 मिलीमीटर बारिश हो चुकी है, जो सामान्य बारिश के कोटे 445.8 मिलीमीटर से 5 प्रतिशत ज्यादा है।



दिखें। मौनसून सीज़न में जुलाई की बारिश ने 22 साल का रिकॉर्ड तोड़ते हुए 231.8 एम.एम. बारिश रिकॉर्ड की है। जो 44 प्रतिशत सरप्लस है। इससे पहले 2001 में जुलाई में 260.9 एम.एम. बारिश हुई थी। अब सबसे हाईहेस्ट बारिश रिकॉर्ड की गई है। मौसम विभाग के अनुसार जुलाई में ये चौथी बार देखने को मिला है कि 200 एम.एम. का आंकड़ा

जबकि 2, 3, 12 से 15, 18, 21, 24 और 31 जुलाई के दिन मौनसून वीक रहा है। आई.एम.डी. चंडीगढ़ के डायरेक्टर डॉ. मनमोहन सिंह के अनुसार मौनसून सीज़न में वीक दिन इस बार ज्यादा लंबे नहीं रहे, 2 से 4 दिन का ही गैप देखने को मिला है। मौनसून सीज़न के दो महीनों में 1 जून से लेकर 31 जुलाई तक 297.6 एम.एम. बारिश हुई। ये सामान्य

7 जिलों में कम हुई बारिश, बाकी जिलों में सरप्लस			
7 जिलों आधा मौनसून बीतने के बाद भी कम बारिश वाले रिकॉर्ड हुए			
जिला	बारिश हुई	होनी चाहिए थी	इतने % कम
मुक्तसर	47.6 एम.एम.	118.3	60 फीसदी
फाजिल्का	44.5 एम.एम.	106	58 फीसदी
बरनाला	86.6 एम.एम.	122.1	29 फीसदी
मानसा	72.2 एम.एम.	92.2	22 फीसदी
संगरूर	105.4 एम.एम.	133	21 फीसदी
बठिंडा	89.1 एम.एम.	106.4	16 फीसदी
मोगा	85.5 एम.एम.	94	9 फीसदी

धान की फसल पर गलन रोग का हमला

सलाह : धान, बासमती की फसलों पर गैर-सिफारिशी कीटनाशकों का न करें प्रयोग

धान और बासमती की खेती में गैर-सिफारिशी कीटनाशकों के होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए खेतीबाड़ी और किसान भलाई विभाग की चलाई जा रही मुहिम के तहत जिला किसान सिखलाई केन्द्र की टीम ने गुरदासपुर ब्लॉक के बाजेचक्क, महादेवकलां, बबबरी आदि गांवों का दौरा किया। जिला सिखलाई अधिकारी डॉ. हरभंदर सिंह व डॉ. दिलराज सिंह भी मौजूद थे। माहिरों ने किसानों को जागरूक किया।

उन्होंने बताया कि धान और बासमती पर किसी किस्म के कीड़े या बीमारी का हमला नहीं है। पूसा-1847, 1692, 1121 और 1509 किस्मों पर कुछ जगहों पर गलन रोग का हमला जरूर हुआ है, जिसकी रोकथाम के लिए किसी के कहने



पर कोई उल्लिखित या किसी अन्य खेती सामग्री का प्रयोग ना करें। खेतीबाड़ी माहिरों की सिफारिश के अनुसार ही काम करें, ताकि खेती लागत खर्च कम कर शुद्ध आमदनी को बढ़ाया जा सके। प्रभावित क्षेत्रों से झंडा रोग से ग्रसित पौधे जड़ से उखाड़ कर नष्ट कर देने चाहिए।

बबबरी गांव के नौजवान किसानों गुरदीप सिंह और मनप्रीत सिंह रंधावा के खेतों में गलन रोग से प्रभावित बासमती की फसल के बारे में डॉ. अमरीक सिंह ने कहा कि किसानों के बासमती की फसल पर गैर-सिफारिशशुदा कीटनाशकों का प्रयोग करने से बासमती चावल निकालते समय कई कीटनाशकों के अंश निर्धारित मापदंडों से अधिक आने के कारण चावल निर्यात करने वाली एजेंसियों को कई मुश्किलें होती हैं। ऐसे में पंजाब सरकार ने 10 कीटनाशकों ऐसीफेट, बूपरोफेजिन, क्लोरोपायरीफॉस, हैक्साकोनाजोल, परोपीकोनाजोल, थायामिथोक्सम, प्रोफिनाफॉस, इमिडाक्लोप्रिड, कार्बेन्डाजिम, ट्राईसाइकलाजोल के बासमती की फसल पर प्रयोग करने, बेचने और भंडारण करने पर पाबंदी लगा दी है। इसलिए इनका प्रयोग बासमती की फसल पर ना किया जाए, ताकि निर्यात एजेंसियों को कोई समस्या ना हो।

बीज कानून पाठशाला

बीज कृषि का प्रमुख आदान है और फसल उत्पादन बीज की गुणवत्ता पर निर्भर होता है। भारत सरकार ने बीज की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए बीज अधिनियम-1966, बीज नियम-1968, बीज नियंत्रण आदेश-1983 निरूपित किए ताकि अधिक से अधिक चरित्रवान बीज उत्पादन एवं वितरण बीज कानूनों के अनुसार किया जा सके। आज प्रतिस्पर्धा के युग में कुछ व्यक्तियों ने बीज व्यवसाय को अपनी जीविकोपार्जन का साधन बनाया है और सच्ची-सुच्ची नेक नियत से कृषक समाज की सेवा करते हैं। कृषि विभाग बीज कानूनों की अपनी सहूलियत के अनुसार व्याख्या कर बीज उत्पादकों बीज विक्रेताओं को गाहे-बगाहे किसान हितों की दुहाई देकर नई-नई अड़चनें खड़ी करते रहते हैं। समाचार-पत्र भी चटकते लेकर इन विषयों को छापते हैं। यहां इन चटपटी बातों की प्रामाणिकता की व्याख्या की गई है और प्रथम कड़ी प्रस्तुत है :

महाराष्ट्र में ई.सी. एक्ट

एक डेलीहंट के माध्यम से सोशल मीडिया पर समाचार प्रकाशित हुआ कि महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडनवीस साहिब ने कहा

बीज उद्योग की चपटपटी खबरें (प्रथम कड़ी)

महाराष्ट्र में लागू होगा ई.सी. एक्ट

आर.बी. सिंह, एरिया मैनेजर (सेवानिवृत्त), नेशनल सीड्स कारपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का संस्थान), सम्प्रति - 'कला निकेतन', ई-70, विधिका संख्या-11, जवाहर नगर, हिसार-125001 मो. 94667-46625, 79883-04770

आर.पी. सिंह, सहायक महाप्रबंधक (सेवानिवृत्त), नेशनल सीड्स कारपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का संस्थान), सम्प्रति शिवछाया, 320, सुन्दर नगर, हिसार मो. 97290-62567

कि महाराष्ट्र कैबिनेट मीटिंग में निर्णय लिया है कि महाराष्ट्र सरकार बीज उर्वरक की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए बीज और उर्वरक पर E.C. Act लगायेगी।

प्रथम दृष्टियां समाचार पढ़ने से लगेगा कि बीज और उर्वरक व्यवसाय पर नया पहाड़ टूट पड़ा और अब यह व्यवसाय करना दुष्कर होगा परन्तु ऐसा नहीं है।

मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि बीज कानून एवं उर्वरक कानून दोनों केन्द्र के कानून हैं और राज्य इनमें कुछ भी छेड़छाड़ नहीं कर सकता। हां, कुछ संशोधन करने का सुझाव दे सकता है और यदि वह संशोधन हो जाता है, तो महाराष्ट्र में ही नहीं बल्कि पूरे देश में लागू होगा।

उप-मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडनवीस के व्यक्तित्व में लेशमात्र भी सच्चाई नहीं है, क्योंकि ई.सी. एक्ट केवल महाराष्ट्र में ही नहीं बल्कि पूरे भारत में वर्ष 1955 से लागू है और भारत सरकार द्वारा

लगाया गया अधिनियम है। शुरू में बीज उत्पादक प्रमाणीकरण और विक्रय बीज अधिनियम 1966 के अनुसार हुआ और केवल अधिसूचित किस्मों तक ही सीमित रहा। उस समय बीज उत्पादन नेशनल सीड्स कारपोरेशन एस.एस.एफ.सी. आई. और राज्य बीज निगम करती



कालान्तर में किस्म का विकास किया। ध्यान रहे इन निजी विकसित किस्मों को नोटीफाई करवाने की बाध्यता नहीं थी और उनका बीज उत्पादन करने एवं विक्रय करने में भी कोई बाधा नहीं थी। निजी क्षेत्र में रिसर्च की गई। इन किस्मों का केवल टी. एल. बीज ही बन सकता था, क्योंकि निजी कम्पनियों अपनी किस्में भारत सरकार के द्वारा नोटीफाई नहीं करवाना चाहती थी और नोटीफाई न करवाना बीज विक्रय में अड़चन नहीं था। परेशानी इन किस्मों की गुणवत्ता पर नियंत्रण की आई, क्योंकि कानूनन इन गैर-अधिसूचित किस्मों पर सरकार द्वारा नियुक्त बीज निरीक्षक का अधिकार नहीं था, तब सरकार ने आवश्यक वस्तु अधिनियम-1955 से बीज नियंत्रण आदेश-1983 बनाया यानी गैर-अधिसूचित किस्मों के बीजों को चैक करने का अधिकार बीज निरीक्षक को प्राप्त हुआ, अर्थात् बीज उद्योग में आवश्यक वस्तु अधिनियम महाराष्ट्र में उप-मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस के कहने के अनुसार अब नहीं लगाया

बल्कि यह वर्ष 1983 से पूरे देश में लगा हुआ है, अब तो उसे बता कर बीज विक्रेताओं और बीज उत्पादकों को डराया जा रहा है।

उर्वरक अधिनियम नहीं है, बल्कि उर्वरक क्रय, विक्रय तथा उसकी गुणवत्ता उर्वरक नियंत्रण आदेश-1985 के द्वारा नियंत्रित की जाती है। यह उर्वरक नियंत्रण आदेश आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 (E.C. Act) से ही लिया गया अर्थात् महाराष्ट्र में उर्वरक नियंत्रण आदेश आज से नहीं वर्ष 1985 से लागू है।

उनकी दूसरी टिप्पणी उल्लंघनकर्ता के विरुद्ध एफ.आई.आर. होगी और जल्दी जमानत भी नहीं होगी। बीज व्यवसाय में बीज कानूनों का उल्लंघन Cognizable Offence नहीं है, बल्कि Non-Cognizable Offence है और जमानत होना मुश्किल नहीं होगा।

ऐसे समाचारों से व्यापारी वर्ग भयाक्रान्ता हो जाता है क्योंकि वह कानून को सहजता से समझ नहीं पाता। पिछले वर्ष हिसार-हरियाणा में भी ऐसे समाचारों से प्रचारित किया गया कि पंजाब राज्य में बीज व्यापार पर E.C. Act लग गया है, जो अफवाह थी और झूठ को सच के रूप में करीने से परोसा गया था।

इसलिए मेरा अनुरोध है कि प्रत्येक व्यापारी को बीज, कीटनाशी और उर्वरक कानूनों का प्राथमिक ज्ञान रखना चाहिए।



HIGH-END DETAILING STUDIO

To Preserve Your Car From
Scratches | Uv Ray's | Bird Dropping | Nail Marks
Swirl Marks | Colour Fading



Services Offered

Ceramic Coating | Graphene Coating | PPF



@PROFESSIONAL_DETAILERS



MOHALI : E-2, Industrial Area Phase-2, Sector 57-A Mob. : 98786-00180

PATIALA : Opposite Commando Complex, Rajpura Road Mob. : 98153-00180



मूसलाधार के बाद अब 2 माह सामान्य मौनसून

के दौरान सामान्य बारिश होने का अनुमान है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आई.एम.डी.) ने कहा कि पूर्वी मध्य भारत, पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के कुछ हिस्सों तथा हिमालय के अधिकांश उपसंभागों में सामान्य और इससे थोड़ी अधिक बारिश

होने का अनुमान है।

आई.एम.डी. के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्रा ने कहा कि देश में जुलाई में 13 फीसदी अधिक बारिश दर्ज की गई, लेकिन पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में 1901 के बाद से इस महीने में तीसरी सबसे कम

बारिश दर्ज हुई। देश में अब तक मौनसून सीजन में सामान्य बारिश (445.8 मिलीमीटर) की तुलना में 467 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है, जो पांच प्रतिशत से अधिक है। अलनीनो से अब तक मौनसूनी बारिश पर कोई असर नहीं पड़ा है।

जुलाई में मूसलाधार बारिश के बाद देश में मौनसून सीजन के दूसरे हिस्से (अगस्त एवं सितम्बर)

भारत में कपास की बुवाई 117 लाख हैक्टेयर के पार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार देश में 28 जुलाई तक खरीफ फसल व्हाइट गोल्ड (कपास) के तहत 117.91 लाख हैक्टेयर में बुवाई हुई है, जबकि पिछले साल इस अवधि के दौरान 116.15 लाख हैक्टेयर



में कपास की बुवाई हुई थी।

केन्द्र सरकार ने साल 2023-24 सीजन के लिए किसानों की खरीफ फसल व्हाइट गोल्ड (कपास) का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) में 540 रुपए व 640 रुपए प्रति क्विंटल की वृद्धि करने का फैसला किया है। सरकार ने मीडियम स्टेपल कपास का भाव 6080 से 6620 रुपए और लंबा स्टेपल कपास का भाव 6380 से 7020 रुपए प्रति क्विंटल किया है।

कपड़ा मंत्रालय के अनुसार भारत में नया कपास सीजन 1 अक्टूबर 2023 से शुरू होगा, जो सितम्बर 2024 तक जारी रहेगा। इस बीच रूई कारोबारियों का कहना है कि यू.पी. व हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में अगस्त माह में नई कपास मंडियों में आनी शुरू हो जाएगी। सूत्रों के अनुसार यदि मौसम अनुकूल रहा, तो भारत में इस नए कपास सीजन 2023-24 में कपास की बंपर पैदावार होने के कयास लगाए जा रहे हैं।



ताबा-जी का
वादा इस साल धान की फसल होगी ज्यादा



डोज - 4 किलो/एकड़

ताबा-जी

फायदे:

- ▶ जिनक की निरंतर उपलब्धता।
- ▶ जड़ों का अच्छा विकास।
- ▶ उत्कृष्ट हरियाली निर्माण।
- ▶ आकार, गुणवत्ता और पैदावार में सुधार।
- ▶ खाद की शक्ति में बढ़ोत्तरी।



उपयोग

बेसल डोज और प्रत्यारोपण के 10 दिनों बाद पहला छिटा लगाइए और 30 दिनों बाद दुसरा छिटा लगाइए

KRETAJAN

ग्राहक सेवा संपर्क - +91 8484006196, + 91 8484006806

कम लागत में आमदनी बढ़ाने का बेहतर जरिया हैं ये सब्जियां

अगस्त-सितम्बर माह में करें सब्जियों की खेती

अगस्त-सितम्बर माह में सब्जियां मसलन फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली की देसी किस्मों, शलगम एवं ब्रोकली आदि की बुवाई करने का समय है। किसान इनकी बुवाई करने के बारे में सोच सकते हैं। यह कम समय में आमदनी बढ़ाने का बेहतर जरिया है। फूलगोभी की फसल के लिए अगोती फसल जून से जुलाई एवं मुख्य फसल के लिए अगस्त से मध्य सितम्बर उचित है। अगोती फसल के लिए बीज 500 ग्राम प्रति एकड़ व मुख्य फसल के लिए 250 ग्राम प्रति एकड़ मात्रा उचित है। मुख्य फसल के लिए लाइनों व पौधों के बीच फासला 45x45 सेंटीमीटर व आगामी में 45x30 सेंटीमीटर रखें। इसकी प्रमुख किस्म पूसा सनोबल के-1 है।

इन सब्जियों की करें खेती

पत्तागोभी : इसकी बुवाई का समय सितम्बर से अक्टूबर है। इसके लिए बीज की मात्रा 200-250 ग्राम प्रति एकड़ पनौरी के जरिए व 325 ग्राम प्रति एकड़ सीधी बुवाई के लिए है।

गाजर : इसकी देसी किस्मों की बुवाई का समय अगस्त-सितम्बर है। इसलिए बीज की मात्रा 4-5 किलोग्राम प्रति एकड़ उचित रहेगी। इसलिए कुछ उन्नत किस्में पी.सी. पी.-2, पी.सी.वाई.-2, पी.सी.-161, पंजाब कैरेंट रेड, पंजाब ब्लैक ब्यूटी व पी.सी.-34 हैं।

मूली : इसकी किस्मों पूसा चेतकी, पंजाब सफेद मूली-2, पंजाब पसंद व जापानी वाइट का समय मध्य सितम्बर से अक्टूबर है। इसकी खेती के लिए बीज 4-5 किलो प्रति एकड़ उचित है। कतारों का अंतर 45 सेंटीमीटर व पौधों के बीच अंतर 75 सेंटीमीटर चाहिए।

शलगम : इसकी देसी किस्मों का समय अगस्त-सितम्बर है, जिसके लिए 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ चाहिए। इसलिए एल-1 किस्म बुवाई के लिए उचित है। इसका झाड़ 105 क्विंटल प्रति एकड़ है।

ब्रोकली : इसकी बुवाई मध्य अगस्त से मध्य सितम्बर में की जाती है, जिसके लिए बीज की मात्रा 250 ग्राम प्रति एकड़ ठीक रहेगी। कतारों और पौधों के बीच अंतर 45x45 सेंटीमीटर रखा जाता है। इसकी उन्नत किस्में पालम समृद्धि व पंजाब ब्रोकली-1 है।